- उन्होंने अपनी ओर से भारत सरकार के साथ बातचीत करने के लिए प्रमुख ब्रिटिश वकील सर वाल्टर मोनकेटन, (माउंटबेटन के एक दोस्त) की सेवाओं का सहारा लिया।
- निज़ाम को वार्ता को लम्बा खींचने की उम्मीद थी ताकि इस बीच वह अपनी सैन्य शक्ति का निर्माण कर सके और भारत को अपनी संप्रभुता स्वीकार करने के लिए मजबूर कर सके ; या, कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव को देखते हुए, वह वैकल्पिक रूप से पाकिस्तान में शामिल हो सके।
- इस बीच, राज्य के भीतर अन्य तीन राजनीतिक घटनाक्रम हुए। उग्रवादी मुस्लिम सांप्रदायिक संगठन की शासकीय मदद से राज्य में तेजी से विकास हुआ। ।

रजाकार

- फिर, 7 अगस्त 1947 को हैदराबाद राज्य कांग्रेस द्वारा निजाम पर लोकतंत्रीकरण करने के दवाब को बनाने के लिए एक सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया गया। लगभग 20,000 सत्याग्रहियों को जेल में डाल दिया गया। राज्य के अधिकारियों और रजाकारों द्वारा किए गए हमलों और दमन के परिणामस्वरूप, हजारों लोग राज्य से भाग गए और भारत के अस्थायी शिविरों में शरण ली। राज्य कांग्रेस के नेतृत्व वाले आंदोलन ने अब हथियार उठा लिये।

- 1946 के अंतिम महीनों से अब तक, राज्य के तेलंगाना क्षेत्र में एक शक्तिशाली कम्युनिस्ट नेतृत्व वाले किसान संघर्ष का विकास हो चुका था। 1946 के अंत तक राज्य के गंभीर दमन के कारण क्षीण हुए इस आंदोलन ने अपने जोश को पुनर्जागृत करके, किसान दलम (झुंड) द्वारा रजाकारों के हमलों के खिलाफ, लोगों की सुरक्षा का आयोजन किया गया ।
- जून 1948 तक, निज़ाम के साथ बातचीत काफी लम्बी खिंचने के कारण सरदार पटेल बहुत व्यग्र हो रहे थे। उन्होंने देहरादून से नेहरू को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने हैदराबाद को भारत में विलय करने के लिए सैन्य कार्रवाई की सलाह दी।
- अंत में, 13 सितंबर 1948 को, भारत सरकार ने **ऑपरेशन पोलो** (जिसे हैदराबाद पुलिस एक्शन भी कहा जाता है) शुरू किया और भारतीय सेना को हैदराबाद भेजा गया। निजाम ने तीन दिनों के बाद आत्मसमर्पण कर दिया और नवंबर में भारतीय संघ में शामिल हो गया।
- भारत सरकार ने उदार रहने और निज़ाम को सज़ा ना देने का फैसला लिया। सरकार ने उसे राज्य के पूर्व औपचारिक शासक या राजप्रमुख के रूप में बनाए रखा, उसे पाँच मिलियन रुपये का एक निजी अनुदान दिया गया और अपनी अधिकांश धन संपत्ति रखने की अनुमति भी दी गयी।
- हैदराबाद के प्रवेश के साथ, भारतीय संघ में रियासतों का विलय का कार्य पूरा हो गया, और संपूर्ण भारत भारत सरकार के अंतर्गत आ गया|
- हैदराबाद प्रकरण ने भारतीय धर्मनिरपेक्षता की एक और विजय को चिह्नित किया। न केवल हैदराबाद में बड़ी संख्या में मुस्लिम, निज़ाम विरोधी संघर्ष में शामिल हुए बल्कि देश के बाकी हिस्सों के मुसलमानों ने भी पाकिस्तान के नेताओं और निज़ाम के विघटन के लिए, सरकार की नीति और कार्रवाई का समर्थन किया था।
- 28 सितंबर को पटेल ने सुहरावर्दी को खुशी-खुशी लिखा था कि, भारतीय संघ के मुसलमानों का हैदराबाद के विषय में, खुले में आकर हमारी ओर से लड़ना निश्चित रूप से देश में एक अच्छी छाप छोड़ता है।